www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

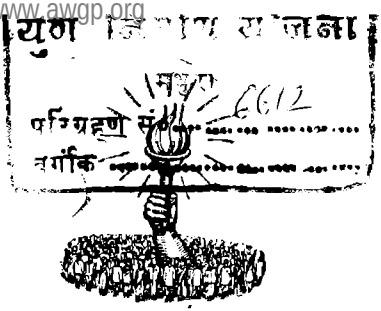

प्रज्ञा अभियान

एवं दैवी चेतना द्वारा उसका परोक्ष सूत्र संचालन

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—ब्रह्मवर्चस्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रज्ञा अभियान एवं दैवी चेतना

द्वारा उसका परोक्ष सूत्र संचालन

प्रज्ञा अभियान की निर्धारणाओं और सफलताओं का लेखा जोखा लेने वालों को कार्य कारण की सङ्गति बिठाने में सफलता नहीं मिल सकती। मानवी प्रयत्नों की एक सीमा है। उसे पार करते हुए अप्रत्याशित परिस्थिति उत्पन्न कर सकना नियन्ता की विधि व्यवस्था के सहारे ही सम्भव हो सकता है। वर्षा काल जैसी सजलता, हरीतिमा, सर्दी जैसी ठिठुरन, बसन्त जैसी मुसकान, गर्मी जैसी तपन कोई मनुष्य उत्पन्न नहीं कर सकता, भले ही वह कितना ही समर्थ क्यों न हो। आंधी जितना व्यापक बुहारी लगाती है उतना कर सकना किसी के बस की बात नहीं। तूफान के साथ उड़ने को सहमत होने वाले तिनके पत्ते तथा धूलि कण आकाश चूमते और द्रुतगामी दौड़ लगाते हैं इसे कौन नहीं जानता।

इतिहास में ऐसे घटनाक्रमों का उल्लेख है जिनकी संगति कायिक और बौद्धिक क्षमता के साथ कतई नहीं बैठती। हनुमान का पर्वत उखाड़ना, समुद्र लाँघना और लंका उजाड़ना उनकी निजी सामर्थ्य से सम्भव हो सकता था यह किस प्रकार माना जाय? यदि वे इतने ही समर्थ थे तो अपने स्वामी सुग्रीव को बालि के त्रास से क्यों न छुड़ा सके? अर्जुन यदि सचमुच ही महाबली थे तो द्रौपदी का भरी सभा में अपमान क्यों होने देते? अज्ञातवास के दिनों जिस तिस की नौकरी क्यों करते फिरते? इन शङ्काओं का कोई बुद्धि संगत समाधान मिलता नहीं।

टिटिहरी द्वारा अगस्त ऋषि की सहायता से समुद्र पाटने का प्रयास एवं ग्वाल-बालों की सहायता से गोवर्धन का उठना व रीछ वानरों के कौशल से समुद्र का पुल बांधना भी कुछ ऐसे बेतुके प्रसंग हैं, जिनका व्यवहार बुद्धि कोई समाधान दे नहीं पाती।

यदि पौराणिक गाथाओं की उपेक्षा की जाय तो भी ऐतिहासिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घटनाक्रम ठीक इसी स्तर के आश्चर्य की अगणित साक्षियाँ प्रस्तुत कर सकने में समर्थ है। बुद्ध की निजी क्षमता और उनके धर्मचक्र प्रवर्तन की व्यापक सफलता का तारतम्य मिलाया जाय तो वणिक बुद्धि का कोई गणित फार्मूला काम देता नहीं दीखता। गाँधीजी का सफल स्वतंत्रता संग्राम किस प्रकार घोर निराशा और प्रतिकूलता को परास्त कर सका, इसकी कार्य कारण संगति किसी कम्प्यूटर के सहारे बैठते नहीं है। समर्थ गुरु रामदास, गुरु गोविन्दसिंह, विवेकानन्द, दयानन्द, विनोबा आदि की सफलताओं को उनका निजी पुरुषार्थ माना जाय तो विवेचना न्याय संगत नहीं हुं गी। उनके पीछे अदृश्य की अनुकूलता का समर्थ अनुदान भी काम करता पाया जाएगा, अन्यथा इनसे भी बड़ी योजनाएँ समर्थ साधनों के सहारे बनाने वालों में से असंख्यों को असफलतायें देखकर यही सोचना पड़ता है कि उनका निजी पराक्रम उस लकड़ी की नाव जैसा सिद्ध हुआ जो तूफान में फँसकर–चट्टान से टकरा कर अपना अस्तित्व गँवा बैठी और मल्लाह के डाँड सतह पर तैरते भर रह गये।

प्रस्तुत प्रसङ्गों की चर्चा यहां इस लिये की जा रही है कि प्रज्ञा-अभियान के आरम्भ से लेकर अब तक का इतिहास सामान्य बुद्धि को हतप्रभ कर देता है। सहज ही यह जिज्ञासा उठ खड़ी होती है कि इतना दुर्धर्ष प्रयास कैसे, किस प्रकार बन पड़ा। आज की उसकी स्थिति और प्रगति का स्तर देखने वाले उसकी गणना युगान्तरकारी अविस्मरणीय आन्दोलनों में करते देखे जाते हैं। वस्तुतः यह मिथ्या भी नहीं है। ऐसा किसी मंच से अब तक न ही सोचा गया कि ५०० करोड़ मनुष्यों के चिंतन, चरित्र और व्यवहार में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने के लिए कारगर प्रयास कब और किस प्रकार किया जाय। प्रज्ञा अभियान ने यह सब सोचा, कदम उठाया और वह कर दिखाया है जिससे सहज ही बुद्धि को विश्वास नहीं होता।

प्रज्ञा अभियान की युग निर्माण योजना सामान्य योग्यता के व्यक्ति द्वारा साधनों का सर्वथा अभाव रहने और मानवी अभाव रहने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और मानवी सहयोग की दृष्टि से मात्र उपहास ही हाथ लगने जैसी परिस्थितियों में ही चलाई गई है। उसे अवरोधों, प्रतिकूलताओं ने पग-पग पर चुनौती दी है। इतने पर भी यह प्रयास गगनचुम्बी स्तर तक पहुँचा। इनका रहस्य ढूँढना हो तो एक ही निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए कि अदृश्य सत्ता की इच्छा प्रेरणा और व्यवस्था ही इस रूप में प्रकट हो रही है जिसे युग परिवर्तन का दृश्यमान सरंजाम कहा जा सके।

इस आन्दोलन के संस्थापक संचालक का बहिरंग व्यक्तित्व जन-साधारण के स्तर जैसा ही प्रतीत होता है सरकारी या श्री सम्पन्नों की-आर्थिक सहायता ही बड़े तन्त्र खड़े करने में सफल होती है। यहाँ उलट-पुलट कर देखने से वैसा भी कुछ दृष्टिगोचर नहीं होता इस असमंजस का समाधान अतीत में दृष्टि डालकर ही हो सकता है जब इस साधारण व्यक्ति ने दैवी प्रेरणा वश सोचा कि धर्मतन्त्र की शक्ति राजतन्त्र से अधिक है। भौतिक क्षेत्र की व्यवस्था और प्रगति का उत्तरदायित्व राजतन्त्र के कंधों पर आता है जबकि चिंतन, चरित्र, व्यवहार और प्रचलन को सही रखने की जिम्मेदारी उठा सकने में मात्र धर्मतन्त्र ही समर्थ है। मनः स्थिति ही परिस्थितियों की निर्मात्री है मनःस्थिति को पवित्र और प्रखर बनाये रहने में धर्मतन्त्र की भूमिका ही कारगर हो सकती है। इसलिए दुर्दशाग्रस्त धर्मतन्त्र को पुनर्जीवित किया जाय। योजनायें रंग लाईं। धर्मतन्त्र से लोक शिक्षण का विचार भी कार्य रूप में परिणत हुआ और आज संसार चकित है कि किस प्रकार यह सृजन सरंजाम साधन रहित परिस्थितियों में भी जुटाकर सफलता की ओर तूफानी गति से आगे बढ़ा।

सहस्रकुण्डी गायत्री महायज्ञ जिनने मथुरा में देखा है वे उसे दैवी चमत्कार कहते हैं। नगण्य से निमन्त्रण पर देश भर के प्रगतिशील धर्म प्रेमियों का चार लाख की संख्या में एकत्रित होना, सभी का धर्म चेतना के जीर्णोद्धार के निमित्त कटिबद्ध होना, हाथों हाथ युग-निर्माण योजना का स्वरूप बनाना और देखते-देखते उसका कार्यान्वित होकर देश

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के कोने-कोने में युगान्तरीय चेतना का आलोक वितरित करना, सचमुच ही ऐसा चमत्कार है जिसे जादुई कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। मत्स्यावतार की कथा में एक नन्ही सी मछली ने देखते-देखते समुद्र को ढक लेने जितना आकार बढ़ाया था। ऐसा किसी मानवी प्रयत्न से नहीं हो सकता। इन दिनों प्रज्ञा परिवार के विश्व भर में प्रायः चौबीस लाख परिजन हैं। सभी एक तरह सोचते और एक दिशा में छोटे बड़े कदम उठाते हैं। नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक क्रान्ति का आवेश सभी पर छाया है। व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण की उमगें पग-पग पर कार्यान्वित होती हुई देखी जा सकती हैं। एक घंटा समय और दस पैसा नित्य के अंशदान द्वारा बूँद-बूँद से गागर भरती है और श्रम-शक्ति, भाव-शक्ति एवम् साधन-शक्ति के अभाव में कोई काम रुकता नहीं। इतना बड़ा आन्दोलन जिसमें पूरे समय के प्रायः एक लाख व्यक्तियों जितना श्रम समय नियमित रूप से लगता हो, अनुपम है। इसे बुद्ध और गाँधी के महान आन्दोलनों के साथ जोड़ा जा सकता है। वे बड़े थे, उनके बड़े सहयोगी थे। पर यहाँ तो नीच बानर ही समुद्र का पुल बाँधते और ग्वाल-बाल ही गोवर्धन उठाते दीखते हैं।

धर्मतन्त्र पर लगे प्रतिगामिता के लाँछन को हटाया और उसकी प्रचंड प्रगतिशीलता सिद्ध करने के लिए आवश्यक समझा गया कि आर्ष-ग्रन्थों को जन-जन तक पहुँचाया और धर्मधारणा का स्वरूप अवगत कराया जाय। देखते-देखते चारों वेद' १०८ उपनिषद्, छहों दर्शन' २० गीताएँ, २४ स्मृतियाँ, आरण्यक' ब्राह्मण एवम् १८ पुराण अनुवादित प्रकाशित और प्रचारित होने लगे। जो कार्य अनेकों ऋषियों ने सहस्रों वर्षों में सम्पन्न किया था लगभग उतना ही श्रम एक व्यक्ति के प्रयास से इतनी स्वल्प अवधि और बिना पूंजी की व्यवस्था के किस प्रकार संम्पन्न हो गया। पुराण लिखने में व्यास जी बोलते और गणेशजी लिखते थे। दो के प्रयास से वह कार्य सम्पन्न हुआ था। यहाँ तो एक ही व्यक्ति सब कुछ करता दीखता है। विचार क्रांति प्रयोजन के लिए विभिन्न भाषाओं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाली सात पत्रिकाएँ ३ लाख के लगभग छपती हैं और मात्र पाठकों के निश्चित अनुबन्ध के अन्तर्गत १५ लाख द्वारा पढ़ी जाती हैं। इतनी बड़ी संख्या में अपने देश की पत्रिकाओं में कदाचित ही किसी के पाठक हों। करोड़ों की पूँजी वाले पत्र व्यवसायियों को पीछे छोड़कर आठ सौ रुपये की लागत से आरम्भ हुआ हैण्ड प्रेस इतनी बड़ी भूमिका किस प्रकार निभा सका इसकी कार्यकारण संगति कैसे बैठे ?

शान्ति-कुञ्ज गायत्री नगर हरिद्वार और गायत्री तपोभूमि मथुरा की इमारतें जिनने देखी हैं, जो देश के कोने-कोने में विनिर्मित २४०० गायत्री शक्तिपीठें देखकर आये हैं वे जानते हैं कि इनके निर्माण मे १०० करोड़ से कम खर्च नहीं हुआ है। तीर्थ और देवालय तो पुरातन काल में भी बने थे और वे सभी राजाओं और सेठों ने बनवाये हैं। जन स्तर पर इतने बड़े निर्माण चन्द दिनों में संकेत मात्र से बनकर खड़े हो गये हों, ऐसा उदाहरण अनादि काल से लेकर आद्यावधि कोई कहीं भी नहीं मिलेगा। अपने क्षेत्रों में वे सभी प्रज्ञा संस्थान जैनरेटरों की, ट्यूब वैलों की, नर्सरियों की, प्रकाश स्तम्भों की भूमिका निभा रहे हैं। सभी के साथ समयदानी, कार्यकर्त्ताओं की उत्साहवर्धक संख्या कार्यरत है। सभी का निर्वाह चल रहा है। सभी अपनी.अपनी सीमा परिधि में नवयुग के अनुरूप वातावरण बनाने में आशातीत ढंग से सफल हो रहे हैं।

ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान द्वारा नवयुग की महती माँग पूरा करने के लिए एक अभूतपूर्व कदम उठाया गया है। श्रद्धा पर आधारित पुरातन अध्यात्म तत्वदर्शन को नई पीढ़ी की मनःस्थिति को देखते हुए तत्वज्ञान, तर्क और तथ्यों द्वारा प्रकाशित करने का प्रयास अभूतपूर्व है। अदृश्य जगत, परोक्ष विद्या, अतीन्द्रिय क्षमता का प्रत्यक्ष प्रतिपादन बन पड़ने से नास्तिकता को आस्तिकता में बदलने वाले, जनमानस की नई दिशा देने वाले दूरगामी परिणाम होंगे। यज्ञ विज्ञान और मंत्र विज्ञान को आधुनिक परिवेश में शोध एवम् एकौषधि विज्ञान के माध्यम से आयुर्वेद का पुनर्जीवन जैसे निर्धारण ऐसे हैं, जिनकी परिणति चमत्कार भरी होगी, ऐसा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विज्ञजनों का मत है। प्रचलित भौतिकवाद पर अध्यात्मवाद को प्रतिष्ठित करने वाला यह एक अनूठा युगान्तरीय प्रयास है। इन दिनों उसका भले ही छोटा कलेवर दृश्य रूप में नजर आता हो, महान अविष्कारों की तरह वृक्ष के रूप में विकसित होने वाले सतत गलते बीज की असीम सम्भावनाओं के बारे में सहज ही भविष्यवाणी की जा सकती है।

एक लाख युगशिल्पी अपने-अपने कार्यक्षेत्रों में शिक्षा विस्तार, प्रौढ़ पाठशाला, चल पुस्तकालय, महिला जागरण, स्वास्थ्य संवर्धन, व्यायामशाला, स्वच्छता अभियान, सामूहिक श्रमदान, हरीतिमा संवर्धन जैसे रचनात्मक कार्यों में प्राणप्रण से संलग्न हैं। नशा निवारण, दहेज उन्मूलन, पर्दा प्रथा, जाति-पाँति, ऊँच-नीच, भिक्षा-व्यवसाय, अपव्यय विरोध, परिवार नियोजन, जैसी महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों को व्यापक बनाने में जन-जन का भावभरा सहयोग अर्जित करने में सफल हो रहे हैं। प्रचारात्मक, रचनात्मक और सुधारात्मक प्रवृत्तियों को आगे बढ़ाने में जितनी प्रगति हो रही है उसे देखते हुए मनुष्य में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण का संकल्प अब दिवास्वप्न नहीं रह गया। उसकी पूर्ति पर सहज विश्वास व्यक्त किया जाने लगा है।

बीस जीप गाड़ियों के माध्यम से भारत के कोने-कोने में प्रज्ञा आलोक फैलाने के लिए किये जा रहे सैकड़ों सृजनात्मक आयोजन वीडियो १६ मि.मी. की फिल्मों तथा टेप रिकार्डर रूपी मिनी फिल्मों व रेडियो स्टेशनों द्वारा विचार-क्रांति का व्यापक प्रसार–विस्तार कुछ ऐसे कदम हैं जिनके परिणामों से सभी चमत्कृत हैं। प्रज्ञा पुराण की कथाओं का घर घर टेप के माध्यम से तथा बड़े आयोजनों द्वारा प्रचलन एवम् २४ लाख व्यक्तियों द्वारा नित्य सम्पन्न सामूहिक प्रज्ञा पुरश्चरण ऐसे अभिनव प्रयोग हैं, जो कहीं और किये नहीं गये। संगीत मण्डलियों द्वारा महाप्रभु चैतन्य की तरह भक्ति भावना का विस्तार एवम् आस्तिकता का वातावरण बनाना भी ऐसा ही अचरज भरा कदम है।

भाषा एवम् धर्म विद्यालयों की स्थापना द्वारा नालन्दा एवम् तक्षशिला

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विश्व विद्यालय परम्परा का पुनर्जीवन अभी-अभी आरम्भ किया गया एक प्रयोग है। विश्वभर में युगान्तरीय चेतना का विस्तार करने का यह भागीरथी सङ्कल्प समय के अनुकूल ही दैवी प्रेरणावश लिया गया एवम् इसकी परिणति की कल्पना भर की जा सकती है।

उपरोक्त तथ्य वे हैं जो सर्वसाधारण को भली भाँति विदित हैं। विगत प्रयासों का प्रतिफल थाली में परोसा और चखा जा रहा है। हांडी में जो पक रहा है और अगले ही दिनों दृश्यमान होकर पिछली उपलब्धियों से अनेक गुने बढ़े-चढ़े चमत्कार प्रस्तुत करने जा रहा है उनका अनुमान वे लोग लगाते हैं जो सूत्र संचालकों के निकट सम्पर्क में हैं।

चर्म चक्षुओं से अदृश्य जगत का तूफानी प्रवाह दृष्टिगोचर नहीं होता। वे इसका निमित्त कारण किन्हीं शरीरधारी व्यक्तियों को देखते हैं एवम् पूज्य गुरुदेव एवम् वन्दनीया माता जी की ओर इशारा करते और उनकी तप साधना को श्रेय देते हैं। अनेकों को जो व्यक्तिगत लाभ मिले हैं और वातावरण बदलने वाले जो प्रयास चले हैं, उनके पीछे इसी युग्म की भावभरी चर्चा करते हैं। पर वस्तुतः बात वैसी है नहीं। यह सदा समझा जाता रहा है कि कठपुतली के खेल में लकड़ी के खिलौने उचकते फटकते भर हैं, उनके पीछे किसी बाजीगर की सधी हुई अदृश्य उँगलियाँ काम कर रही हैं। नियंता की युग परिवर्तन आकांक्षा ही योजना का एक कारण है। श्रेय किसे कितना मिला यह उनकी अग्रगमन की साहसिकता पर निर्भर है। पू० गुरुदेव अपने स्थान बदलते रहते हैं ताकि लोगों को अनुभव हो सके कि उनके बिना भी कहीं कुछ रुकता नहीं, वरन् अपने क्रम से बढ़ता ही चला जाता है। जो सोचते हैं कि पू० गुरुदेव के न रहने पर प्रज्ञा अभियान लड़खड़ाने लगेगा उन्हें अपनी आशंका इस आधार पर समाधान करना चाहिए कि यह किसी व्यक्ति विशेष के पराक्रम, निर्धारण कौशल का परिणाम नहीं है जो हुआ है वह नियन्ता के निर्धारण के अनुसार हुआ है। अगले दिनों उससे भी अनेक गुने समर्थ एवम् व्यापक कदम उठेंगे।

*

प्रका० मुद्रक-युगान्तर चेतना प्रेस, शान्ति कुञ्ज हरिद्वार मू०—४० पैसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org